यशपाल : एक परिचय

फीरोजबेग एस. मिर्जा

शोध-छात्र हिन्दी भवन, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय,

राजकोट (गुजरात)

हिन्दी साहित्य में यशपाल का नाम आदर के साथ लिया जाता है। जब भी प्रगतिवादी साहित्य की चर्चा होती है, यशपाल के नामोल्लेख के बीना वह अधूरी ही रहती है। हिन्दी साहित्य को एक नई श्रृँचाई तक पहुँचाने में यशपाल का योगदान अहम रहा है। उनका जन्म पंजाब के फिरोजपुर छावनी में ३ दिसम्बर १९०३ को एक साधारण परिवार में हुआ था। माता का नाम 'प्रेमदेवी' एवं पिता का नाम 'हिरालाल' था। घर का गुजरान बडी कठिनायों से गुजर रहा था। माता-पिता के अनमेल विवाह के कारण पिता का साया अधिक दिन न रहा। यशपाल और उनके छोटे भाई धर्मपाल को अल्प आयु में ही छोडकर पिता चल बसे। दोनों बच्चों की एवं स्वयं अपनी जिम्मेदारी 'प्रेमदेवी' पर आन पडी। 'प्रेमदेवी' परिश्रमी, कर्मठ एवं धैर्यवान सन्नारी थी। उन्होंने दोनों बच्चों का लालन-पालन अच्छी तरह किया। वह एक अनाथालय में अध्यापिका का काम करने लगी। 'प्रेमदेवी' आर्यसमाज में खूब आस्थावान थी ; अतः यशपाल को वह आर्यसमाज का प्रचारक बनाना चाहती थी। यशपाल की शिक्षा का प्रथम चरण गुरूकुल कांगडी से शुरू हुआ। गुरूकुल कांगडी के कडे अनुशासन ने यशपाल को माँजने का काम किया। आर्थिक अभाव व पेट की बीमारी की वजह से वह अधिक समय गुरूकुल में न रह सके। गुरूकुल के अंग्रेज विरोधी वातावरण ने बालक यशपाल के मस्तिष्क में एक अमिट छाप छोड दी, जिसका प्रभाव उन पर उम्र भर रहा। मैट्रीक तक की पढाई लाहोर और पंजाब में हुई। मैट्रीक के बाद 'नेशनल कॉलेज' में भर्ती हो गये। इस कॉलेज का वातावरण पहले से ही राष्ट्रीयता से रंगा हुआ था। यशपाल बचपन से अंग्रेजों से नफरत करते थे ; अतः नेशनल कॉलेज का वातावरण उनकी रूचि के अनुकूल था। इस कॉलेज में उनकी मित्रता 'भगतसिंह' से हुई। धीरे-धीरे यशपाल की मित्रता भगवतीचरण वोहरा, राजगुरू, सुखदेव, चंद्रशेखर आजाद, दुर्गाभाभी आदि क्रांतिकारियों से मित्रता होती चली गई। यशपाल हि.स.प्र.स (हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र सेना) के सदस्य बन गये। इस दल का उद्देश्य साम्राज्यवादी नीति का विरोध करना था। अंग्रेज साम्राज्यवाद के प्रतिक समा भारत की जनता का शोषण कर रहे थे ; अतः उनका सामना करना इस दल का मूल हेतु था। सन् १९१७ की रूसी क्रांति (लाल क्रांति) ने इन नौजवानों को अपनी ओर आकर्षित किया। यह दल मार्क्सवादी साहित्य पर चिंतन-मनन करने लगा। १९१९ के चौराचारी हत्याकांड से दुःखी गांधीजी ने असहयोग आंदोलन को समेट लिया। भारतीय जनता को विश्वास हो गया था कि अब स्वतंत्रता कुछ ही कदमों की दूरी पर है, तभी चौराचोरी की घटना से विचलित गांधीजी ने आंदोलन को ठंडा कर दिया। भारतीय जनता निराश हो गई। युवाशक्ति अपने को ठगा महसूस करने लगी। अब हि.स.प्र.स. दल के नौजवानों को पक्का विश्वास हो गया कि आजादी के लिए गिडगिडाना बेकार है। अंग्रजों को गोली का जवाब गोली से देना चाहिए। उस समय भारतीय जनता के संवैधानिक अधिकारों हेतु अंग्रेजो ने एक कमिशन का गठन किया, जिसमें एक भी भारतीय को शामिल नहीं किया गया था। इस कमिशन की अध्यक्षता 'सायमन' कर रहा था। अतः 'लाला लाजपतराय' ने इसके विरूद्ध मोर्चा निकाला। पुलिस ने मोर्चे को तोडने के लिए लाठिचार्ज किया। लाठिचार्ज में डी.एस.पी. सांडर्स के हाथों,

लालाजी को सर पर गंभीर चोट लग गई । चोट इतनी गहरी थी कि चोट से लालाजी की मृत्यु हो गई । 'लाला लाजपतराय' युवावर्ग के चहेते वयोवृद्ध नेता थे ; अतः भगतसिंह, यशपाल, राजगुरू आदि ने लालाजी के हत्यारे सांडर्स को गोली मारने का तय कर लिया । १७ दिसम्बर १९२८ को लाहोर में डी.ए.वी. कॉलेज के सामने भगतसिंह और राजगुरू ने सांडर्स की हत्या कर लालाजी की मृत्यु का प्रतिशोध ले लिया । इस कार्य में यशपाल की प्रत्यक्ष भूमिका रही । सांडर्स की हत्या के बाद दल के लिए पैसे जुटाने का काम यशपाल को सौंपा गया, जिसे उन्होंने सफलतापूर्वक पार किया ।

भारतीय जनता इस दल को उत्तपात मचानेवाली टोली समझती थी । अतः दल ने असेम्बली में बम फैंककर अपने उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए पर्चे फैंकने का निश्चय किया, जिससे भारतीय जन-मानस इनके उद्देश्यों को समझ सके। भगतसिंह, राजगुरू और बटुकेश्वर दत्त ने ८ अप्रैल १९२९ को इस कार्य को सफलतापूर्वक किया और अपने-आपको जानबूझकर गिरातार करवा दिया । इस कार्य में भी यशपाल परोक्ष रूप से सक्रिय थे जिसका विस्तृत उल्लेख यशपाल ने अपनी आत्मकथा 'सिंहावलोकन' में किया है । भगतसिंह, राजगुरू और बटुकेश्वर दत्त की गिरातारी के पश्चात् दल ने लाहोर में बम फैक्ट्री का निर्माण किया । इस कार्य को यशपाल सहित दूसरे क्रांतिकारी किया करते थे । बम बनाने के लिए मर्करी फलमिनेट का निर्माण करना पडता था और वह कार्य सबसे कठिन था । इससे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पडता था किंतु यशपाल फिर भी बम बनाते रहे । इस कार्य में कितनी यातनाएं सहनी पडती थी, उसका उदाहरण देते हुए यशपाल 'सिंहावलोकन' में स्वयं लिखते हैं - ''सुखदेव ने उस में आहिस्ता-आहिस्ता एक तेजाब मिलाना शुरू किया । तश्करी में से धुये के हल्के-हल्के बादल उठने लगे और हम लोगों को खांसी आनी शुरू हुई । तौलिये और रूमाल नाक और मुंह पर रख कर हम लोग जुटे ही रहे । पारे में तेजाब मिलाते समय शीशे की एक छड से उसे लगातार हिलाते रहना भी आवश्यक था इसलिए दूर भी न हटा जा सकता था । प्रायः दो घण्टे की इस सिरदर्दी के बाद सुरमें जैसे रंग का पदार्थ मर्करी फलमिनेट बन गया ।''१ लाहोर में फेक्ट्री अधिक दिन तक नहीं चल सकी । पुलिस ने छापा मारा जिसमें कई साथी पकडे गये, किंतु यशपाल किसी काम से बाहर गये थे ; अतः अब उनके फरारी के दिन शुरू हो गये । बम बनाना सिखने एवं दल के लिए पैसे जुटाने के लिए यशपाल ने कई भेष बदले और भारत के कई क्षेत्रों में भ्रमण भी किया । यशपाल का अंतिम कारनामा 'वाइसरोय' को मारने का षड्यंत्र रहा । 'वाइसरोय' की ट्रेन को बम से उडाने के लिए साथी 'इन्द्रपाल' के साथ कई दिन तक 'बाबाजी' के भेष में जानकारी इकट्ठा की और एक दिन सुबह ट्रेन के डिब्बे को उडा दिया । कोहरे की वजह से 'वाइसरोय' वाले डिब्बे की जगह एक खाली डिब्बा उड गया । यह सारी घटना का विस्तृत वर्णन यशपाल लिखित 'सिंहावलोकन' के द्वितीय भाग में दिया गया है ।

फरारी के दिनों में यशपाल के नयन दल की सदस्या 'प्रकाशवती कपूर' से लड गये । वह दोनों अपने हृदय की झनकार को रोक न सके । आजाद ने जब यह बात सूनी तो यशपाल को गोली मारने का आदेश दे दिया । यशपाल आजाद से मिले, सारी हकीकत बताई और गलत फहमी दूर की । आजाद ने जिस पिस्तौल से यशपाल को गोली मारने का आदेश एक साथी को दिया था, वही पिस्तौल यशपाल को आजाद ने आत्मसुरक्षा हेतु भेट में दे दिया । यशपाल और प्रकावती का प्रेम दल के काम में बाधा नहीं बना । प्रकाशवती ने दल के काम को पूरी निष्ठा और लगन से किया ।

आजाद की शहादत के पश्चात् दल ने यशपाल को दल का चीफ बना दिया । चीफ कमान्डर बनने के एक वर्ष के भीतर ही सन् १९३२ में यशपाल गिरातार कर लिये गये । यशपाल पर मुकदमा चला और १४ वर्ष की लंबी कैद की सजा सुनाई गई । प्रकाशवती यशपाल से सच्चा प्रेम करती थी, इसलिए यशपाल को लंबी कैद के बावजूद भी उन्होंने कैदी यशपाल से जेल में विवाह कर लिया । जेल में यशपाल का

स्वास्थ्य खराब रहने लगा था। प्रकावती जी ने यशपाल को जेल से मुक्त करवाने का खुब प्रयत्न किया और भाग्य से कोंग्रेस की सरकार को सत्ता प्राप्त हुई जिसके फल-स्वरूप यशपाल सन् १९३८ को जेल से मुक्त हो गये। जेल के भीतर ही उन्होंने मार्क्सवादी साहित्य का खुब अध्ययन किया एवं 'पिंजरे की उडान' जैसा कहानी संग्रह लिख डाला।

सन् १९३८ के बाद यशपाल समाज के समक्ष एक नये रूप में दिखाई दिये। शोषण अत्याचार का सामना जहाँ वह पिस्तौल से करते थे, उसका स्थान अब कलम ने ले लिया था। सन् १९३८ से सन् १९७६ मृत्यु पर्यन्त वह निरंतर लिखते रहे। लेखन-कार्य में गृहस्थी, पाठकवर्ग से पत्र-व्यवहार, पुस्तक प्रकाशन आदि कार्य में प्रकाशवती का साथ यशपाल को हमेशा बना रहा। यदि प्रकाशवती यशपाल के जीवन में न आती तो शायद यशपाल को इतनी प्रसिद्धी भी न मिल पाती। यशपाल ने १७ कहानी-संग्रह में लगभग २०० जितनी कहानियाँ लिखी जिनमें 'पिंजरे की उडान', 'तर्क का तूफान', 'फूलो का कुर्ता', 'खच्चर और आदमी', आदि चर्चित कहानी संग्रह रहे हैं। एक दर्जन जितने उपन्यास लिखे जिनमें 'दादा कामरेड', 'दिव्या', 'झूठा सच भाग-१,२', 'मेरी तेरी उसकी बात', विशेष चर्चा के केन्द्र में रहे। 'झूठा सच' तो यशपाल की किर्ती का स्तंभ माना जाता है। आजादी से ठीक पहले का भारत यदि हमें 'प्रेमचंद' के 'गोदान' में दिखाई देता है तो आजादी के ठीक बाद के भारत का जीता-जागता दस्तावेज 'झूठा सच' को माना जाता है। यशपाल ने कुल नौ (९) निबंध संग्रह लिखे हैं, 'न्याय का संघर्ष', 'मार्क्सवाद', 'गांधीवाद की शव परीक्षा', 'चक्कर क्लब', 'बात-बात में बात', 'देखा सोचा समझा' आदि-आदि। इन्होंने निबंधो में समाज के दबे-कुचले वर्ग का प्रतिनिधित्व किया। शोषण के विरूद्ध जबरदस्त आवाज उठायी। नारी-विमर्श, अंधश्रद्धा का विरोध, शिक्षा का महत्व, साधनहीनों की दयनीय स्थिति आदि उनके निबंध के विषय रहे हैं। इसके अलावा उनकि आत्मकथा 'सिंहावलोकन' के तीन भाग को अच्छी सफलता मिली। यात्रा-साहित्य, नाट्य साहित्य और अनुवाद में भी यशपाल ने हाथ आजमाया किन्तु उतनी सफलता नहीं मिली जितनी पूर्व रचित साहित्य को मिली।

अंततोगत्वा यशपाल के क्रांतिकारी जीवन को देखते हुए कोई यह विश्वास नहीं कर सकता कि पिस्तौल चलानेवाला नौजवान इतनी धारदार कलम भी चला सकता है इस संदर्भ में 'महादेवी वर्मा' का एक वाक्य यहाँ सार्थक होता दिखाई देता है यथा - ''जब यशपाल पीढी के साहित्यकार सरस्वती की साधना में लगे थे तब यशपाल किसी बन्द कमरे में बैठ बम बना रहे थे और जब कई वर्ष बाद यशपाल सरस्वती के मंदिर पहुँचे तो सरस्वती का घ्यान सब से अधिक यशपाल पर हो गया।''२

संदर्भ

१. यशपाल, (१९७२). सिंहावलोकन प्रथम भाग, लोकभारती प्रकाशन, पाँचवा संस्करण पृ. १९६ .

२. सरोजगुप्त, (१९७०). यशपाल व्यक्तित्व और कृतित्व, अनुराग प्रकाशन, प्रथम-संस्करण पृ. ३३ .